International Journal of Combined Research & Development (IJCRD)
eISSN:2321-225X;pISSN:2321-2241 Volume: 10; Issue: 7; July -2021

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी– समस्याएँ

शालिनी सागर

सहायक आचार्य

नॉएडा इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी, नॉएडा, गौतमबुद्धनगर

प्रस्तावना

नारी जननी है उसके बिना जीवन और जग का आगे बढ़ना असंभव है। नारी माँ है, बहन है, पत्नी है और प्यारी पुत्री भी है नारी के बिना धरती नरकमय स्थान मात्र है। माना जाता है कि हमारे देश में वैदिककाल में नारी को पूर्ण आदर प्रदान किया जाता था। नारी संपूर्ण रूप से स्वतंत्र थी। वैदिककाल की नारियों ने पुरुषों के समकक्ष स्थिति का आनंद लिया। वैदिककाल की महिलाएँ शिक्षित होती थी, लेकिन पुरुष प्रधान होने की भावना उसके जीवन की दिशा को बदल डालने में सबल रही।

मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई। बालविवाह, पुनर्विवाह पर रोक, बहुविवाह, देवदासी प्रथा जैसी कुरीतियों के माध्यम से नारी जाति का शोषण आरंभ हो गया। नारियों को पर्दे के पीछे कैद कर दिया गया। इसके बावजूद अनेक नारियों ने संघर्ष करते हुए राजनीति, साहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियाँ अर्जित कर सम्मान पाया।

भारत में विदेशी शासन खासकर मुगल शासन से नारी के जीवन की दिशा बदल चुकी थी। पुरुष प्रधान भावना धीरे–धीरे उसे प्रथम वर्ग से दूसरे वर्ग की श्रेणी देनी लगी। नारी की स्थिति नित गिरती जाने लगी। नारी अपनी स्वतंत्रता खोकर कठोरता झेलने लगी।

आजादी के बाद सन् 1950 में जब देश को संविधान मिला तो उसमें स्त्रियों को सुरक्षा, सम्मान और पुरुषों के समान अवसर व अधिकार मिले किंतु अशिक्षा, पुरातनवादी सोच तथा कमजोर सामाजिक ढाँचे के कारण नारी जाति उन अवसरों और अधिकारों का पूर्ण रूप से लाभ न उठा पाई। अपने बचपन में वह पिता जवानी में पति तथा वृद्धावस्था में पुत्र पर निर्भर रही। पति के घर में प्रवेश करने के बाद उसकी अर्थी ही बाहर निकलती रही।

फिर भी नारी अपने जीवन को अपनी मर्जी से चलाने, स्वयं निर्णय लेने तथा अपने कार्यों को खुद कर नहीं सकती, लेकिन आज नारी विभिन्न पदों में विशिष्ट रूप से काम करने पर भी उसकी स्वतंत्रता पर अब भी प्रश्नचिह्न लगे हुए हैं। उसे पूर्णविराम में बदलने की कोशिश, प्रयास मात्र ठहरा है।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी जीवन तथा समस्याओं का यथार्थ चित्रण आकर्षक ढंग से किया गया है। नारी के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं पाई जानेवाली समस्याओं का सशक्त वर्णन कृष्णा सोबती के द्वारा यथार्थ रूप से

किया गया है। नारी के जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए अपनी कहानी को बढ़ाने का महान कार्य करने मे कृष्णाजी सफल सिद्ध हुई है। विशिष्ट रूप से विभिन्न नारी समस्याओं पर प्रकाश डालकर कृष्णा सोबती अपने–आपको सशक्त नारी उपन्यासकार साबित करने में सफल सिद्ध हुई है।

नारी समस्याओं का मूलाधार

नारी समस्याओं का मूलाधार पुरुष प्रधान समाज ही है। पुरुष प्रधान समाज में नारीमुक्ति कल्पना मात्र ठहरती है। पुरुष अपने आपको सर्वशक्तिमान समझता है और नारी पर शासन करना चाहता है। वह अपने आपको मलिक और स्त्री को दासी समझ बैठा है। पुरुष कहीं, कभी आ जा सकता है लेकिन स्त्री नहीं। पुरुष किसी से बात कर सकता है लेकिन स्त्री को कभी नहीं। उसे कभी कोई स्वतंत्रता नहीं। पुरुष प्रधान समाज में नारी की दयनीय दशा पर प्रकाश डालती हुई दिलो– दानिश की छूना कहती है– श्दद्दा से महाविरा करेंगे। पुरानी रिवायतों के कढावा यहाँ न देखो, वहाँ न देखो। खिड़की क्यों खुली। चिलमन क्यों उठी है भाई लोगों की दुनिया कुछ और है हम लोगों की कुछ और।

समाज की कुछ उच्च शिक्षित नारियाँ और उनके संगठन शायद यह समझते हैं कि मनचाहे कम वस्त्र पहनना, मुक्त जीवन जीना ही वांछित बदलाव है। इस बदलाव का उनके पास कोई तर्कयुक्त जवाब उनके पास नहीं है सिवाय इसके कि सदियों से चले आ रहे रहन–सहन व आचार–व्यवहार के हर नियम को उन्हें बस चुनौती देना है।

आधुनिक हो जाने पर भी जीवन से संबंधित लगभग सभी क्षेत्रों में नारी के सहयोग तथा अनुपम कार्य को देखने के बाद भी पुरुष की मनोदशा में कोई बदलाव नहीं आया है। वह वही करना चाहता है, जो पुराने जमाने में कर रहा था। उसे नारी दूसरी श्रेणी की है। उसके लिए स्त्री शरीर मात्र है। उसके शरीर से अपनी कामवासना की तृप्ति तथा अपनी संतानों की उत्पत्ति उसका एकमात्र कार्य है। पुरुष प्रधान भावना को कृष्णा सोबती अपने इन शब्दों में सुंदर रूप से प्रकट करती है – स्त्री देह है। इसलिए वह आत्मदया से ग्रस्त है। पुरुष में आत्मा के रूप में परमात्मा का प्रवेश है। नारी देह में प्रकृति का निवास है। माया की दूसरा नाम ही प्रकृति है।

पुरुष प्रधान समाज में रहते हुए नारी अपने आपके उन विचारों की आदी बना लेती है। नारी के लिए तो सारी नैतिकता, सारे आदर्श पुरुषों के समान आत्मनिर्भर और आत्मसंयमी तथा स्वतंत्रता पूर्ण नहीं बल्कि दूसरों के प्रति समर्पित होनेवाला, दूसरों पर निर्भर रहनेवाला होना, दूसरों के लिए जीनेवाला, दूसरों के प्रेम के लिए अपना सब कुछ त्यागकर, त्याग में सुख अपनाना ही है। पति, पिता, भाई, बच्चे आदि सभी रूपों में मर्द की आराधना उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना नारी के लिए कर्त्तव्य बन गया है।

कृष्णा जी के प्रारंभिक उपन्यास श्डार से बिछुड़ीश और श्मित्रो मरजानीश में स्त्री के इस स्वभाव पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डाला गया है। मित्रो की सास उसे समझाते हुए कहती है श्सुमित्रावंती, इसे जिद चढ़ी है तो तू ही आँख

नीची कर ले। बेटे मर्द मालिक का सामना हम बेचारियों को क्या सोहे?ष पुरुष प्रधान समाज में नारी की मनोभावना का सही परिचय कृष्णा सोबती के इस वाक्य से एकदम स्पष्ट हो जाता है। मर्द को मालिक कहकर स्त्री–मन का परिचय तथा पुरुष प्रधान समाज में नर तथा नारी की दर्जा पर कृष्णा सोबती प्रकाश डालती हैं।

भारत में बचपन नारी को त्याग, क्षमा, समर्पण आदि बातों प्रमुखता देने की सीख दी जाती है। उसे बचपन से ही अपने भाई, पिता आदि के साथ बात करने का ढंग सिखाया जाता है। उसे पर–पुरुषों से दूर रहने की शिक्षा दी जाती है। सब कुछ बदलने पर भी नारी की मानसिकता में पूर्ण स्वतंत्रता तथा नारी मुक्ति के विचार नहीं आए हैं।

आर्थिक परतंत्रता

मनुष्य के जीवन में अर्थ का स्थान अद्वितीय है। किसी ने सच ही कहा है कि श्बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपयाश नारी को अपनी इच्छानुसार सफल जीवन जीने के लिए उसको आर्थिक रूप से खुशहाल बनाना आवश्यक है। आर्थिक निर्भरता में उसे अपने पति, पिता, भाई या पुत्र के सामने हाथ फैलाने की नौबत आती है घर चलाने के लिए पति पैसा कमाता है। कमाई उसकी होने के नाते पत्नी सेविका या दासी बन जाती है। कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यासों में आर्थिक समस्या को यथार्थता से प्रस्तुत करती हैं। अर्थ जीवन का आधार है। इस पर जीवन की सारी स्थितियाँ निर्भर होती हैं। अर्थ के अभाव में नारी नारकीय जिंदगी जीनी पड़ती है।

श्यारों के यारश उपन्यास में तमन्ना की जिंदगी में आर्थिक अभाव में नरकीय हो गई है। वे पैसों के कारण अपने आपको बेच देती है। उन्हें एक वस्तु समझकर उसके शरीर का सौदा होने लगता है। इस कारण सूरी कहता है जानता भी है इस कहचेरी के कट्टे को बीस टके दो चिपफंड और काला बाजार स्मग्लर सिंडिकेट का मालिक है। औरतों का कोआपरेटिव बहनचोद अलग से चलाता है।ष इससे स्पष्ट होता है कि अर्थ प्राप्त करने के लिए नारी सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाती है और नारी के जीवन में अर्थ एक समस्या बन गई है।

स्त्री का शिक्षित होना तथा आत्मनिर्भर होना अपने अधिकार को समझने तथा पाने में मदद करता हैं। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने पर स्त्रियों में स्वाभिमान की मात्रा अधिक होती है। इसी तथ्य पर जोर देते हुए कृष्णाजी लिखती हैं, श्उसका वक्त तब सुधरेगा जब वह अपनी जीविका आप कमाने लगेगी। सोचने की बात है मर्द काम करता है, तो उसे एवज में अर्थ धन प्राप्त होता है औरत दिन–रात जो खटकती रहती है वह बेगार के खाते में ही न भूली रहती है अपने को मोह–ममता में, अनजान –बेध्यान। वह अपनी खोज खबर न लेगी तो कौन उसे पूछनेवाला है।

यह सत्य है कि नारी घर में रहकर जितने कार्य करती है यदि उनका मोल लगाया जाए तो वह पुरुष से कहीं भी कम नहीं ठहरती। लेकिन इस सत्य को अनदेखा करते हुए मर्द उसे अपनी सेविका मान रहा है। इस स्थिति को बदलना नारी के हाथों में है नारी चाहेगी तभी इस समस्या से दूर हो सकती है।

नारी शोषण

नारी शोषण भारत में वैदिककाल के बाद से अब तक चली आनेवाली समस्या है। नारी सबला भी क्यों न हो उसे अबला के रूप में देखना, अबला का भी उपयोग अपेक्षित स्तर तक करना नर का काम बन गया है। माँ, बहन, पत्नी, पुत्री व सेविका के रूप में नारी सदा नरों का काम करती आ रही है। उसे न कभी चौन मिलता है न ही आराम कर्त्तव्यों के नाम पर चारदीवारी में वह चक्कर काटती रह जाती है।

श्डार से बिछुड़ीश उपन्यास की श्पाशोश पात्र का शारीरिक, मानसिक और वैचारिक शोषण हुआ है। पाशो मामा–मामी के पास रहकर भी, वह शोषण की शिकार बनी हुई है। उसे गालियाँ देकर उसका मानसिक शोषण करने हैं–श्अरी, यह कुल्छनियोंवाले हाव–भावश मामियाँ कहती हैं अरी कुर्वे में डूब मरी थी। तेरी बीज डालनेवाली अब तू सँभालकर साँस भर। ६

ऐ लड़की का अम्मू इस सत्य पर प्रकाश डालते हुए कहती है–श्चलाई होती व परिवार की गाड़ी तुमने भी तो अब तक समझ गई होती कि गृहस्थी में नारी शोभा नामा की है। यह इसकी पत्नी है, बहू है, माँ है, नावी है, दात्री है। फिर वही खाना, पहचाना और गटना। लड़की वह नाम की महरानी है। सब कुछ पोंछ–पोंछ के उसे बिठा दिया जाता है अपनी जगह पर ।

घर में नारी शोषण

ज्यादातर घरों में पुरुष ही निर्णायक होता है। उसी के निर्णय को घर में महत्त्व दिया जाता है अन्य स्त्रियों को कभी नहीं स्त्री क्षमता की मूर्ति मात्र रहकर अपने अधिकार खोते हुए भी संघर्ष के लिए तैयार नहीं होती है। वह त्याग की मूर्ति बनकर रह जाती है। नारी कभी पुत्री के नाम से, कभी सहेली के नाम से कभी प्रेमिका के नाम से, कभी बहन के नाम से, कभी पत्नी के नाम शोषण का शिकार होती है।

अन्य समस्याएँ लड़की के जन्म से उससे संबंधित समस्याएँ भी शुरू हो जाती है। लाख बात बदल जाने पर भी लड़का लड़की का भेदभाव अब तक नहीं बदला है। समाज की इस स्थिति पर अरण्या के द्वारा कृष्णाजी यों कहती है– श्पुरानी व्यवस्था अब भी कायम है नए बदलाओं के साथ लड़के और लड़की में भेद परिवार में पुत्री और पुत्र का अनोखा द्वंद्व जारी है। गर्भ में ही पुत्रियों की हत्या और पुत्रों के सरंक्षण साधन कानून बन चुके हैं मगर उन्हें लागू कौन करेगा?

नारी के जीवन में यह बात बिल्कुल सही है। हर कहीं नारी होने के मात्र से उसे विशिष्ट समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मातृत्व नारी के लिए वरदान है। ममता तथा मातृत्व से भरी नारी जननी है। नारी में नया जीवन सृजन करने की क्षमता है। नारी मातृत्व को अपना परम सौभाग्य मानने लगती है। श्ऐ लड़कीश में अम्मू कहती है–श्लड़की, बच्चा बनाना एक तरह का यज्ञ ही री। इन दिनों औरत पूरे ब्रह्मांड से शक्ति के कण खींचकर अपनी ऊर्जा ज्वलित कर लेती है। अपने में कुछ विशिष्ट ही जीती है। अपने अंदर का आकाश निखारती है। जीवन उत्पन्न करने में

उसकी गूँथ गूँज कुदरत से मिली रहती है। ९ नारी मुक्ति की गलत धारणा भी नारी को संकट में डाल सकती है। नारी मुक्ति के नाम पर नकारने योग्य बातों को प्रधानता दे तो उससे स्त्री जाति का पतन मात्र संभव है।

निष्कर्ष

कृष्णा सोबती नारी के जन्म से उसकी वृद्धावस्था तक के विभिन्न अवस्थाओं में नारी से भोगी जानेवाली समस्याओं का सही चित्रण अपने उपन्यासों में कर रखी है, जन्म के पहले या जन्म के तुरंत बाद स्त्री शिशु की हत्या उसकी तिरस्कार आदि पर प्रकाश डालती हुई कृष्णा सोबती नारी के विभिन्न अवस्थाओं पर प्रकाश डालती हैं। पुरुष प्रधान समाज की स्थापना में शोषित नारी की अवस्था का वर्णन यथार्थ रूप से प्रदान करने में कृष्णा सोबती का कार्य सम्माननीय रहा है।

सालों के बाद पीढ़ियों के बाद भी नारी शोषण इस पुरुष प्रधान समाज में खत्म नहीं हुआ। पुरुष–प्रधान समाज में आधुनिकता के छाने पर भी वांछित परिवर्तन अब तक संभव नहीं हुआ है। स्त्री जाति की मुक्ति अब तक नाम मात्र के लिए रह चुकी है। स्त्री आश्रिता ठहर चुकी है। उसे और सम्मान या अधिक स्वतंत्रता अभी तक अप्राप्त है। कृष्णा सोबती अपने उपन्यासों के द्वारा इन सत्यों को बाहर लाने में सफल सिद्ध हुई हैं। सामाजिक यथार्थता को उचित शब्दों में प्रकट करने में श्रीमती कृष्णा सोबती को पूर्ण सफलता मिली है।

बलात्कार की क्रूरता को रत्ती के चरित्र से दिखाकर बचपन में जो अन्याय उससे सहा गया है, उसका जिंदगीभर दुख भोगना सामाजिक यथार्थ की चरमसीमा है। रत्ती के द्वारा लेखिका ऐसी अनेक लड़कियों के जीवन पर प्रकाश डालती हैं। वैश्या समस्या पर ज्यादा नहीं लिखने पर भी वृद्धावस्था में वैश्या की दुर्गति पर प्रकाश डालकर उसके प्रति पाठकों के मन में दया भाव उत्पन्न करने के साथ–साथ सामाजिक सत्य पर भी प्रकाश डालकर कृष्णा जी श्रेष्ठ सामाजिक चिंतक सिद्ध हुई हैं।

संदर्भ

1.कृष्णा सोबती, दिलोदानिश, पृ.65 2. वही, पृ. 167

2. कृष्णा सोबती, मित्रो मरजानी, पृ० 12

3 . कृष्णा सोबती, दिलोदानिश, पृ. 84 5. वही, पृ. 83

4. कृष्णा सोबती, ऐ लड़की, पृ.63 7. वही, पृ.67

5. कृष्णा सोबती यारों के यार, पृ. 54

6. कृष्णा सोबती, डार से बिछुडी पृ. 17 10. कृष्णा सोबती, ऐ लड़की, पृ. 12 11. वही, पृ. 58

7. कृष्णा सोबती, यारों के यार, पृ० 37

8. कृष्णा सोबती, सूरजमुखी अँधेरे के, पृ. 17

9. कृष्णा सोबती, सोबती एक सोहबत, पृ. 392 15. सीमान द बोउवार, द सेंकड सेक्स, पृ. 84

10. कृष्णा सोबती, मित्रो मरजानी, पृ. 97

11. कृष्णा सोबती, समय सरगम, पृ. 92 18. कृष्णा सोबती, ऐ लड़की, पृ. 57